Heer–Ranjha in the Haryanvi Ragni Tradition: A Cultural Analysis in the Light of Pingal Shastra (With Reference to Ragnis 23–28)

हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा: पिंगल शास्त्र के आलोक में एक सांस्कृतिक विश्लेषण (रागणी 23–28 के संदर्भ में)

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary | e-ISSN: 2455-3085
Double-blind peer-reviewed and refereed online Journal (Impact Factor-6.93)
11 (4) 14-20, 2026
©The Author(s) 2026
10.31305/rrijm.2026.v11.n04.002
https://rrjournals.com/

Received: 9 Feb, 2026
Revised: 26 Mar, 2026
Accepted: 28 Mar, 2026
Published: 15 Apr, 2026

*Anand Kumar Ashodhiya

Independent Researcher and Former Warrant Officer, Indian Air Force

Abstract: *The present research paper analyzes Ragnis 23–28 of the Haryanvi Ragni tradition of Heer–Ranjha from literary, cultural, and Pingal Shastra perspectives. These ragnis represent the final stage of the narrative, where love evolves towards social acceptance, conflict, conspiracy, tragedy, and ultimately immortality. The objective of the study is to clarify that in the Haryanvi Ragni tradition, Heer–Ranjha is not merely presented as a love story, but as a representative narrative of folk memory, cultural values, and social structures. The present study is based on a qualitative and interpretative method, in which narrative, original ragni texts, and literary review have been analyzed in an integrated manner. On the basis of Pingal Shastra, the arrangement of matras, caesura, rhyme, alliteration, and rhythmic structure have been examined. Along with this, through the character of Heer, the expression of women's consciousness, social constraints, and emotional resistance has also been studied. The study concludes that Ragnis 23–28 are not merely expressions of love, but also represent social contradictions, folk beliefs, cultural values, and spiritual experiences. The tragic end of the narrative immortalizes Heer–Ranjha in folk memory. Thus, the Haryanvi Ragni tradition is established as an important cultural heritage of Indian folk literature and oral tradition.*

Keywords: *Heer-Ranjha, Haryanvi Ragni, Pingal Shastra, Folk Literature, Cultural Studies, Women's Consciousness, Folk Theatre*

Abstract in Hindi Language: *प्रस्तुत शोध-पत्र में हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी-परंपरा की रागणी 23–28 का साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा पिंगल-शास्त्रीय दृष्टि से विश्लेषण किया गया है। ये रागणियाँ कथा के अंतिम चरण का प्रतिनिधित्व करती हैं, जहाँ प्रेम सामाजिक स्वीकृति, संघर्ष, षड्यंत्र, त्रासदी और अमरत्व की परिणति तक विकसित होता है। अध्ययन का उद्देश्य यह स्पष्ट करना है कि हरियाणवी रागणी-परंपरा में हीर–राँझा केवल प्रेमकथा के रूप में नहीं, बल्कि लोक-स्मृति, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संरचनाओं के प्रतिनिधि आख्यान के रूप में उपस्थित है। प्रस्तुत शोध गुणात्मक एवं व्याख्यात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसमें वृत्तांत, मूल रागणी-पाठ और साहित्यिक समीक्षा का समन्वित विश्लेषण*

*Corresponding Author
Anand Kumar Ashodhiya, Independent Researcher and Former Warrant Officer, Indian Air Force
ashodhiya68@gmail.com

Creative Commons Non Commercial CC BY-NC: This article is distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial 4.0 License (http://www. creativecommons.org/licenses/by-nc/4.0/) which permits non-Commercial use, reproduction and distribution of the work without further permission provided the original work is attributed.

Access Online

किया गया है। पिंगल शास्त्र के आधार पर मात्रा-विन्यास, यति, तुकांत, अनुप्रास और लयात्मक संरचना का परीक्षण किया गया है। साथ ही, हीर के चरित्र के माध्यम से नारी-चेतना, सामाजिक बंधनों और भावात्मक प्रतिरोध की अभिव्यक्ति का अध्ययन भी किया गया है। अध्ययन से यह निष्कर्ष प्राप्त होता है कि रागणी 23–28 केवल प्रेम की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे सामाजिक विडंबनाओं, लोक-आस्थाओं, सांस्कृतिक मूल्यों और आध्यात्मिक अनुभवों का भी प्रतिनिधित्व करती हैं। कथा का त्रासद अंत हीर–राँझा को लोक-स्मृति में अमर बनाता है। इस प्रकार, हरियाणवी रागणी-परंपरा भारतीय लोक-साहित्य और मौखिक परंपरा की एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्थापित होती है।

Keywords: *हीर–राँझा, हरियाणवी रागणी, पिंगल शास्त्र, लोक साहित्य, सांस्कृतिक अध्ययन, नारी-चेतना, लोकनाट्य*

1 | अध्ययन की पृष्ठभूमि एवं संदर्भ

प्रस्तुत अध्ययन हीर–राँझा विषयक हरियाणवी रागणी-परंपरा की उस श्रृंखला का अगला चरण है, जिसके पूर्ववर्ती भागों (रागणी 1–22) का विश्लेषण पूर्व प्रकाशित शोधपत्रों में किया जा चुका है। हीर–राँझा की प्रेमगाथा भारतीय उपमहाद्वीप की लोक-स्मृति में एक दीर्घजीवी सांस्कृतिक आख्यान के रूप में प्रतिष्ठित है। इसकी मूल प्रेरणा पंजाब की लोक और सूफी परंपरा से संबद्ध होने पर भी हरियाणा की रागणी-परंपरा में इसका रूपांतरण एक विशिष्ट सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के रूप में सामने आता है। यहाँ यह कथा केवल प्रेम और विरह की अनुभूति तक सीमित नहीं रहती, बल्कि ग्रामीण समाज की संरचना, पारिवारिक प्रतिष्ठा, पितृसत्तात्मक मूल्यों, सामुदायिक दबाव और मानवीय संवेदनाओं के जटिल संबंधों को भी उद्घाटित करती है।

हरियाणवी रागणी-परंपरा ने हीर–राँझा कथा को स्थानीय भाषा, छंद-विधान, लय और मंचीयता के माध्यम से पुनर्सृजित किया है। इसके परिणामस्वरूप यह कथा एक नए सांस्कृतिक स्वरूप में विकसित होती है, जिसमें लोक-जीवन, सामुदायिक विश्वास और क्षेत्रीय संवेदनाएँ अधिक स्पष्ट रूप से व्यक्त होती हैं। प्रस्तुत अध्ययन विशेष रूप से रागणी 23–28 पर केंद्रित है, जो कथा के अंतिम और निर्णायक चरण का प्रतिनिधित्व करती हैं।

इन रागनियों का वृत्तांत अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, क्योंकि यह केवल घटनाओं का क्रम प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि उनके सामाजिक, सांस्कृतिक और भावात्मक संदर्भों को भी स्पष्ट करता है। राजा आदिल शाह के आदेश से प्रारंभ हुआ विवाह-संबंध जहाँ सामाजिक स्वीकृति का संकेत देता है, वहीं आगे चलकर पारिवारिक अहं, प्रतिष्ठा और सामाजिक दबाव के कारण वही स्थिति दुःखांत परिणति में परिवर्तित हो जाती है। रागणी 23 और 24 में हीर की वाणी के माध्यम से विवाह-संस्कार, स्त्री की भावनात्मक स्थिति और सामाजिक मर्यादाओं का सूक्ष्म चित्रण मिलता है। इसके विपरीत रागणी 25 से 27 तक कथा करुणा, विडंबना और संघर्ष की दिशा में विकसित होती है, जहाँ हीर को विष देकर मार दिया जाना केवल व्यक्तिगत अपराध नहीं, बल्कि उस सामाजिक कठोरता का प्रतीक है जो प्रेम और स्वतंत्र इच्छा को स्वीकार नहीं कर पाती।

रागणी 28 इस समूची कथा को सांस्कृतिक निष्कर्ष तक पहुँचाती है, जहाँ हीर–राँझा लोक-स्मृति में अमर हो जाते हैं। मजारों, मेलों और लोकगायन की परंपरा के माध्यम से उनका प्रेम पीढ़ी-दर-पीढ़ी जीवित रहता है। इस प्रकार वृत्तांत, रागणी-पाठ और साहित्यिक समीक्षा मिलकर एक समन्वित अध्ययन-आधार निर्मित करते हैं, जिसके माध्यम से कथा का साहित्यिक, सांस्कृतिक, सामाजिक और आध्यात्मिक विश्लेषण संभव हो पाता है।

2 | साहित्य समीक्षा

हीर–राँझा की प्रेमगाथा भारतीय उपमहाद्वीप की लोक-परंपरा में एक अत्यंत महत्त्वपूर्ण आख्यान के रूप में स्थापित है। इसकी साहित्यिक अभिव्यक्ति समय, भाषा और क्षेत्रीय संस्कृति के अनुसार निरंतर परिवर्तित होती रही है। इस कथा का सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रभावशाली काव्यात्मक रूप पंजाबी सूफी कवि वारिस शाह द्वारा प्रस्तुत किया गया, जिसमें हीर–राँझा के प्रेम को केवल लौकिक संबंध के रूप में नहीं, बल्कि आध्यात्मिक अनुभव के रूप में भी देखा गया है। उनकी दृष्टि में प्रेम आत्मा और परम सत्ता के मध्य संबंध का प्रतीक बन जाता है। इस कारण हीर–राँझा की कथा केवल लोककथा न रहकर दार्शनिक और सांस्कृतिक विमर्श का विषय बन जाती है।

दामोदर गुलाटी और हाशिम शाह जैसे रचनाकारों ने भी इस कथा को अपने-अपने समय और सामाजिक संदर्भों के अनुसार पुनर्सृजित किया। इन कवियों ने कथा के मूल स्वर को बनाए रखते हुए उसमें स्थानीय जीवन, सामाजिक अनुभव और भावनात्मक विस्तार को जोड़ा। परिणामस्वरूप हीर–राँझा की कथा एक स्थिर आख्यान न रहकर एक जीवंत लोक-परंपरा के रूप में विकसित हुई। आधुनिक काल में भी इस कथा पर आधारित नाट्य-रूपांतरण, चलचित्र और लोकगायन इसकी निरंतर प्रासंगिकता को प्रमाणित करते हैं।

हरियाणवी रागणी-परंपरा में हीर–राँझा की कथा एक विशिष्ट लोक-सांगीतिक स्वरूप ग्रहण करती है। यहाँ भाषा की सहजता, भावों की तीव्रता और मंचीय प्रस्तुति की शक्ति इस कथा को लोक-जीवन के अत्यंत निकट ले आती है। हजारी प्रसाद द्विवेदी ने लोक-साहित्य को समाज की सामूहिक चेतना का दर्पण माना है। उनके अनुसार लोककथाएँ ऐतिहासिक अनुभवों, सांस्कृतिक स्मृतियों और सामाजिक मूल्यों को संरक्षित रखने का कार्य करती हैं। इसी प्रकार रामचंद्र शुक्ल ने हिंदी साहित्य में लोक-तत्वों की भूमिका को महत्त्वपूर्ण मानते हुए यह स्पष्ट किया है कि लोक-साहित्य में समाज की मूल संवेदनाएँ और जीवन-दृष्टि स्वाभाविक रूप से व्यक्त होती हैं।

ए. के. रामानुजन ने भारतीय लोककथाओं की विविधता पर विचार करते हुए यह प्रतिपादित किया है कि लोककथाएँ स्थिर नहीं होतीं, बल्कि वे विभिन्न भाषायी और सांस्कृतिक परिवेशों में निरंतर रूपांतरित होती रहती हैं। उनके अनुसार प्रत्येक पुनर्कथन उस समाज की विशिष्ट संवेदनाओं, अनुभवों और सांस्कृतिक आवश्यकताओं को अभिव्यक्त करता है, जिसमें वह निर्मित होता है। इस दृष्टि से हरियाणवी रागणी-परंपरा में हीर–राँझा कथा का रूपांतरण एक महत्त्वपूर्ण सांस्कृतिक प्रक्रिया है।

लोक-नाट्य और प्रस्तुति-परंपरा के संदर्भ में कैथरीन हैनसेन ने उत्तर भारतीय लोक-नाट्य रूपों का अध्ययन करते हुए यह स्पष्ट किया है कि लोककथाएँ केवल लिखित रूप में नहीं, बल्कि गायन, वादन और मंचीय प्रस्तुति के माध्यम से भी अपनी पूर्णता प्राप्त करती हैं। यह विचार हरियाणवी रागणियों के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि इनकी प्रभावशीलता केवल पाठ में नहीं, बल्कि उनके सामूहिक गायन, संवाद और मंचीय प्रस्तुति में निहित होती है।

उपरोक्त साहित्यिक और आलोचनात्मक परंपराओं के आधार पर यह स्पष्ट होता है कि हीर–राँझा की कथा बहुआयामी सांस्कृतिक आख्यान है। हरियाणवी रागणी-परंपरा में इसका रूपांतरण इस बात का प्रमाण है कि लोक-साहित्य विभिन्न सामाजिक और सांस्कृतिक संदर्भों में नए अर्थ ग्रहण करता रहता है। पूर्ववर्ती अध्ययनों में रागणी 23–28 पर पृथक और पिंगल-आधारित विश्लेषण का अभाव रहा है। प्रस्तुत अध्ययन इसी परिप्रेक्ष्य में रागणी 23–28 का विश्लेषण करते हुए यह समझने का प्रयास करता है कि किस प्रकार वृत्तांत, रागणी-पाठ और साहित्यिक समीक्षा के समन्वय से यह प्रेमगाथा व्यापक सांस्कृतिक विमर्श का रूप धारण करती है।

3 | शोध पद्धति

प्रस्तुत शोध गुणात्मक अनुसंधान-पद्धति पर आधारित है, जिसमें साहित्यिक, सांस्कृतिक तथा छंदशास्त्रीय आयामों का समन्वित विश्लेषण किया गया है। अध्ययन का प्रमुख उद्देश्य रागणी 23–28 के माध्यम से हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी-परंपरा में निहित प्रेम, सामाजिक संरचना, लोक-विश्वास और सांस्कृतिक प्रतीकों की व्याख्या करना है। इसी कारण इसकी प्रकृति व्याख्यात्मक और विश्लेषणात्मक है।

इस अध्ययन में रागणी 23–28 के वृत्तांत, मूल काव्य-पाठ तथा उनसे संबंधित साहित्यिक समीक्षा को प्राथमिक स्रोत के रूप में ग्रहण किया गया है। इन तीनों घटकों—वृत्तांत, रागणी और समीक्षा—को परस्पर संबद्ध इकाइयों के रूप में देखा गया है, जिससे कथा-प्रवाह, भाव-संरचना और सांस्कृतिक संकेतों का समग्र अध्ययन संभव हो सके। द्वितीयक स्रोतों के अंतर्गत लोक-साहित्य, सूफी काव्य-परंपरा, हिंदी आलोचना और हरियाणवी संस्कृति से संबंधित प्रामाणिक ग्रंथों का उपयोग किया गया है, जिनके माध्यम से अध्ययन का वैचारिक आधार निर्मित किया गया है।

पाठ-विश्लेषण की प्रक्रिया में रागनियों के कथ्य, भाव, प्रतीक, भाषा और शैली का सूक्ष्म परीक्षण किया गया है। विशेष रूप से संवादात्मक संरचना, स्त्री-अनुभूति, लोक-प्रतीकों—जैसे बारात, सेहरा, विष, मजार और मेले—तथा सांस्कृतिक रूपकों की पहचान कर उनकी व्याख्या की गई है। सांस्कृतिक विश्लेषण के अंतर्गत इन रागनियों को हरियाणवी लोक-संस्कृति, पितृसत्तात्मक सामाजिक व्यवस्था और सामुदायिक प्रतिष्ठा के संदर्भ में देखा गया है, ताकि यह स्पष्ट हो सके कि व्यक्तिगत प्रेम किस प्रकार सामाजिक मान्यताओं और पारिवारिक नियंत्रण से टकराता है।

प्रस्तुत शोध में पिंगल शास्त्र को विश्लेषण का एक महत्त्वपूर्ण आधार बनाया गया है। छंदात्मक परीक्षण के अंतर्गत प्रत्येक रागणी में मात्रा-विन्यास, यति, तुकांत और अनुप्रास का व्यवस्थित अध्ययन किया गया है। इससे न केवल रागनियों की संरचनात्मक विशेषताओं को समझने में सहायता मिलती है, बल्कि उनके ध्वन्यात्मक सौंदर्य, श्रवणीयता और मंचीय प्रभाव को भी स्पष्ट किया जा सकता है।

अध्ययन की एक अन्य विशेषता यह है कि इसमें कथात्मक और मंचीय दोनों दृष्टियों को सम्मिलित किया गया है। रागणी मूलतः श्रव्य और प्रदर्शन-प्रधान विधा है; अतः इसके अध्ययन में केवल लिखित पाठ पर्याप्त नहीं माना जा सकता। इसी कारण टेक, लय, गायन-शैली और वाद्य-संकेतों को भी विश्लेषण का हिस्सा बनाया गया है। इस प्रकार प्रस्तुत शोध लोक-साहित्य, काव्यशास्त्र, सांस्कृतिक अध्ययन और समाजशास्त्रीय दृष्टि के समन्वय से रागणी 23–28 का व्यापक और प्रमाणिक अध्ययन प्रस्तुत करता है।

4 | कथात्मक एवं साहित्यिक विश्लेषण

रागणी 23–28 का कथात्मक एवं साहित्यिक विश्लेषण यह संकेत करता है कि इन रचनाओं में वृत्तांत, मूल रागणी-पाठ और भाव-संरचना एक-दूसरे से गहरे रूप में संबद्ध हैं। इनका अध्ययन केवल घटनाओं के क्रम को समझने तक सीमित नहीं है, बल्कि इनके माध्यम से प्रेम, सामाजिक मान्यताओं, सांस्कृतिक मर्यादाओं और लोक-विश्वासों की जटिल अभिव्यक्तियों को भी समझा जा सकता है।

रागणी 23 में हीर की वाणी के माध्यम से प्रेम का उत्सवधर्मी और सांस्कृतिक स्वरूप सामने आता है। "जै घोड़ी चढ़ कै, तूँ आ ज्यावै, तेरे तै ब्याह रचाऊँ" तथा "तेरी दुल्हन बणकै, सज सँवरकै, घूँघट में शर्माऊँ" जैसी पंक्तियाँ विवाह की कल्पना को केवल भावनात्मक आकांक्षा के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक मान्यता और सांस्कृतिक स्वीकृति के रूप में प्रस्तुत करती हैं। "ओ पाळी राँझणा, लाइए ना वार इब मनै ब्याहवण में" जैसी टेक हीर की आतुरता और उसके मनोभावों की तीव्रता को अभिव्यक्त करती है। यहाँ हीर केवल प्रेमिका के रूप में उपस्थित नहीं है, बल्कि वह एक ऐसी स्त्री के रूप में सामने आती है जो अपने संबंध को सामाजिक वैधता और सार्वजनिक स्वीकृति के साथ देखना चाहती है।

रागणी 24 में यह भाव और अधिक स्पष्ट हो जाता है। "तूँ बरात चढ़ा कै आ, मनै ड्योळे में लेज्या" तथा "फेरे होंगे तेरे मेरे सात बचन भरिए" जैसी पंक्तियाँ विवाह-संस्कार की सांस्कृतिक अनिवार्यता को रेखांकित करती हैं। "तेरा आरता करकै मैं फूल बगाऊंगी" और "सखी सहेली सारी तेरे पाछै पड़ ज्यांगी" जैसे बिंब विवाह को एक सामूहिक और उत्सवमय आयोजन के रूप में प्रस्तुत करते हैं। इस प्रकार रागणी 23 और 24 में प्रेम का स्वर निजी भाव से आगे बढ़कर सामाजिक और सांस्कृतिक स्वीकृति तक पहुँचता है।

रागणी 25 में कथा करुण मोड़ ग्रहण करती है। "धोखा दे कै पिता नै मारी, दिया खिल्या ज़हर लाड्डू में" जैसी पंक्तियाँ पारिवारिक प्रतिष्ठा और सामाजिक भय के कारण उत्पन्न क्रूरता को उद्घाटित करती हैं। "ओ मेरा लिकड़या जा सै दम, हो ना इस्सै जन्म संगम" में हीर की अंतिम पीड़ा और अधूरे प्रेम का गहन भाव उपस्थित है। "आगले जन्म तनै बरूंगी" जैसी अभिव्यक्ति प्रेम को सांसारिक सीमाओं से परे ले जाकर उसे आध्यात्मिक विस्तार प्रदान करती है। यहाँ हीर की पीड़ा केवल व्यक्तिगत दुख नहीं रह जाती, बल्कि वह उस सामाजिक संरचना की विफलता का प्रतीक बन जाती है जो प्रेम और स्वतंत्र इच्छा को स्वीकार नहीं कर पाती।

रागणी 26 और 27 में राँझे का विलाप कथा को भावात्मक चरम तक ले जाता है। "मेरी हीर मार कै गेर देई, तम्ह मन्नै भी मरवाइयो रै" तथा "जो भी ज़हर दिया हीरे तै, वो मन्नै भी चटवाइयो रै" जैसी पंक्तियाँ राँझे की उस स्थिति को व्यक्त करती हैं जहाँ जीवन का समस्त अर्थ हीर के साथ समाप्त हो चुका है। "हीर बोलना, अँखियाँ खोलना, तेरा पाळी आ लिया" जैसी पुकार प्रेम, अस्वीकार और निराशा के बीच के गहरे द्वंद्व को प्रकट करती है। "इस पापी दुनियादारी नै बस मौत ही देई" जैसी पंक्ति सामाजिक व्यवस्था के प्रति गहन मोहभंग को व्यक्त करती है। इन रागनियों में मृत्यु केवल अंत नहीं है, बल्कि प्रेम की अंतिम परिणति और स्थायित्व का माध्यम बन जाती है।

रागणी 28 इस पूरी कथा को लोक-स्मृति और सांस्कृतिक स्थायित्व प्रदान करती है। "झंग नगर के पावन धाम पै, फूल चढ़ावैं लोग लुगाई" तथा "तख़्त हज़ारे में दीप जळावैं, श्रद्धा मन में खूब समाई" जैसी पंक्तियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि हीर–राँझा अब केवल कथा-पात्र नहीं रह जाते, बल्कि लोक-आस्था और सांस्कृतिक स्मृति के स्थायी प्रतीक बन जाते हैं। "हो कै फ़ना वे अमर कुहागे" में प्रेम की पराकाष्ठा को अमरता के रूप में रूपायित किया गया है।

समग्रतः रागणी 23–28 यह स्थापित करती हैं कि हीर–राँझा की कथा केवल प्रेम के उत्सव या उसके करुण अंत तक सीमित नहीं है। यह कथा प्रेम, सामाजिक नियंत्रण, सांस्कृतिक मर्यादा, नारी-अनुभूति, बलिदान और लोक-आस्था के बहुआयामी संबंधों को उद्घाटित करती है। इन रागनियों में प्रेम उत्सव से त्रासदी और त्रासदी से अमरता तक की यात्रा पूर्ण करता है, जिससे हरियाणवी लोक-साहित्य की सांस्कृतिक गहराई और कलात्मक परिपक्वता स्पष्ट रूप से सामने आती है।

5 | पिंगल एवं छंदात्मक विश्लेषण

रागणी 23–28 का पिंगल एवं छंदात्मक विश्लेषण यह स्पष्ट करता है कि हरियाणवी रागणी-परंपरा में काव्य-सौंदर्य केवल भावों की अभिव्यक्ति तक सीमित नहीं है, बल्कि वह ध्वनि, लय, विराम और प्रस्तुति की संरचना से भी निर्मित होता है। इन रचनाओं के वृत्तांत, मूल पाठ और भाव-संरचना के संयुक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि इनमें पिंगल शास्त्र के सिद्धांतों का संतुलित और सुसंगत प्रयोग किया गया है।

रागणी 23 में प्रायः अठारह मात्राओं वाली सममात्रिक योजना दिखाई देती है। "जै घोड़ी चढ़ कै, तूँ आ ज्यावै, तेरे तै ब्याह रचाऊँ" जैसी पंक्ति में मात्रा-संतुलन और लय का समन्वय स्पष्ट रूप से अनुभव किया जा सकता है। प्रत्येक चरण में लगभग आठ-आठ मात्राओं के पश्चात आने वाला विराम गायन के समय भावों की अभिव्यक्ति को अधिक प्रभावी बनाता है। "तेरी दुल्हन बणकै, सज सँवरकै, घूँघट में शर्माऊँ" में 'रचाऊँ' और 'शर्माऊँ' जैसे तुकांत पद ध्वनि-सौंदर्य को सुदृढ़ करते हैं। "मंद मंद मुस्काइये" तथा "झुकाकै नाड़ लिकड़ जड़कै" जैसे प्रयोग अनुप्रास के माध्यम से रागणी की ध्वन्यात्मकता को और अधिक प्रभावशाली बनाते हैं।

रागणी 24 में सोलह मात्राओं की सममात्रिक योजना अधिक स्पष्ट रूप में सामने आती है। "तूँ बरात चढ़ा कै आ, मनै ड्योळे में लेज्या" तथा "फेरे होंगे तेरे मेरे सात बचन भरिए" जैसी पंक्तियाँ मात्रा-विन्यास और लयात्मक प्रवाह की दृष्टि से संतुलित हैं। यहाँ भी आठ-आठ मात्राओं पर स्थापित विराम पंक्तियों को स्वाभाविक प्रवाह प्रदान करता है। "तेरा आरता करकै मैं फूल बगाऊंगी" तथा "रब्बा रब्बा, फेर के होगा" जैसी पंक्तियों में पुनरुक्ति और तुकांत योजना रागणी की श्रवणीयता तथा मंचीय प्रभाव को सुदृढ़ करती है।

रागणी 25 में करुण भाव की प्रधानता के कारण छंद का प्रवाह अपेक्षाकृत मंद और गंभीर हो जाता है। "ओ मेरा लिकड़या जा सै दम, ओ मनै इस्सै बात का गम" तथा "धोखा दे कै पिता नै मारी, दिया खिल्या ज़हर लाड्डू में" जैसी पंक्तियों में 'दम', 'गम' और 'संगम' जैसे तुकांत शब्द करुणा की तीव्रता को बढ़ाते हैं। "तेरे सिर की खाऊँ कसम" तथा "गुरु पालेराम की शरणां" जैसे पदों में ध्वनियों की पुनरावृत्ति भावात्मक तनाव को अधिक प्रभावी रूप में व्यक्त करती है।

रागणी 26 और 27 में पुनः अठारह मात्राओं की योजना प्रमुख रूप से दिखाई देती है। "मेरी हीर मार कै गेर देई, तम्ह मन्नै भी मरवाइयो रै" तथा "जो भी ज़हर दिया हीरे तै, वो मन्नै भी चटवाइयो रै" जैसी पंक्तियाँ लय और मात्रा-संतुलन के साथ विलापपूर्ण भाव को सशक्त रूप से व्यक्त करती हैं। "हीर बोलना, अँखियाँ खोलना, तेरा पाळी आ लिया" जैसी पंक्ति में विराम का प्रयोग भावात्मक तीव्रता को बढ़ाता है। 'भारी–यारी' और 'करणा–डरणा' जैसे तुकांत पद तथा "लीली काया पड़ती आग्यी" जैसी ध्वन्यात्मक संरचनाएँ रागणी की अभिव्यक्ति को और अधिक प्रभावशाली बनाती हैं।

रागणी 28 में छंद पुनः श्रद्धा और स्मृति से जुड़ी लय ग्रहण करता है। "झंग नगर के पावन धाम पै, फूल चढ़ावैं लोग लुगाई" तथा "तख़्त हज़ारे में दीप जळावैं, श्रद्धा मन में खूब समाई" जैसी पंक्तियाँ तुकांत और लय के माध्यम से सामूहिक गायन के अनुकूल वातावरण निर्मित करती हैं। "हो कै फ़ना वे अमर कुहागे" में ध्वनि और अर्थ का ऐसा समन्वय दिखाई देता है, जो प्रेम की अंतिम परिणति को अमरता के रूप में स्थापित करता है।

समग्रतः रागणी 23–28 के छंद-विधान से यह स्पष्ट होता है कि सोलह और अठारह मात्राओं की सममात्रिक संरचना, आठ-आठ मात्राओं पर विराम, युग्म तुकांत योजना और अनुप्रास के सघन प्रयोग ने इन रचनाओं को विशिष्ट काव्यात्मक रूप प्रदान किया है। यह संरचना केवल श्रवणीयता और सौंदर्य को नहीं बढ़ाती, बल्कि रागणी को एक प्रभावशाली लोक-प्रस्तुति के रूप में भी स्थापित करती है। इस प्रकार पिंगल शास्त्र के सिद्धांत यहाँ केवल औपचारिक अनुशासन तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे भाव, लय और सांस्कृतिक संप्रेषण के मध्य सक्रिय संबंध स्थापित करते हैं।

6 | चर्चा

रागणी 23–28 के वृत्तांत, मूल रागणी-पाठ और साहित्यिक समीक्षा के संयुक्त अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हीर–राँझा की यह श्रृंखला केवल प्रेमकथा का विस्तार नहीं है, बल्कि यह भारतीय लोक-संस्कृति में विद्यमान सामाजिक संरचनाओं, स्त्री-पुरुष संबंधों, सांस्कृतिक मान्यताओं और नैतिक द्वंद्वों का बहुआयामी चित्र प्रस्तुत करती है। इन रागनियों में कथात्मकता, काव्यात्मकता और मंचीयता एक-दूसरे से गहरे रूप में जुड़ी हुई हैं, जिसके कारण ये रचनाएँ केवल साहित्यिक पाठ नहीं रह जातीं, बल्कि व्यापक सांस्कृतिक अनुभव का रूप ग्रहण कर लेती हैं।

रागणी 23 और 24 में हीर का चरित्र एक सक्रिय, सजग और सांस्कृतिक रूप से सचेत स्त्री के रूप में उभरता है। वह प्रेम को केवल निजी अनुभूति के रूप में नहीं, बल्कि सामाजिक स्वीकृति और पारिवारिक मर्यादा से जुड़े संबंध के रूप में देखती है। "तूँ बरात चढ़ा कै आ, मनै ड्योळे में लेज्या" तथा "तेरी दुल्हन बणकै, सज सँवरकै, घूँघट में शर्माऊँ" जैसी पंक्तियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि हीर प्रेम की परिणति विवाह और सामाजिक मान्यता में देखती है। इस प्रकार इन रागनियों में स्त्री का स्वर न तो केवल विद्रोह का स्वर है और न ही निष्क्रिय स्वीकार का; बल्कि वह परंपरा और आत्मनिर्णय के बीच संतुलन स्थापित करने का प्रयास करता है।

रागणी 25 में कथा का करुण पक्ष सामने आता है। "धोखा दे कै पिता नै मारी, दिया खिल्या ज़हर लाड्डू में" जैसी पंक्तियाँ उस सामाजिक कठोरता को उद्घाटित करती हैं जिसमें पारिवारिक प्रतिष्ठा और सामुदायिक भय के कारण प्रेम का दमन किया जाता है। हीर की अंतिम वाणी—"हो ना इस्सै जन्म संगम" तथा "आगले जन्म तनै बरूंगी"—यह संकेत करती है कि प्रेम सांसारिक विफलता के बावजूद अपनी निरंतरता बनाए रखता है। यहाँ प्रेम केवल जीवन की अनुभूति नहीं, बल्कि मृत्यु के पार तक विस्तृत भाव बन जाता है।

रागणी 26 और 27 में राँझे का विलाप कथा को अत्यंत मार्मिक स्तर पर ले जाता है। "मेरी हीर मार कै गेर देई" तथा "हीर बोलना, अँखियाँ खोलना" जैसी पंक्तियाँ केवल शोक की अभिव्यक्ति नहीं हैं, बल्कि वे उस सामाजिक व्यवस्था के प्रति गहरे अस्वीकार को भी व्यक्त करती हैं, जिसने प्रेम को जीवित रहने का अवसर नहीं दिया। "इस पापी दुनियादारी नै बस मौत ही देई" जैसी पंक्ति सामाजिक संरचना के प्रति मोहभंग को प्रकट करती है। राँझे द्वारा वही विष ग्रहण करना प्रेम को आत्म-बलिदान के माध्यम से पूर्णता प्रदान करता है। इस प्रकार प्रेम यहाँ केवल भावनात्मक नहीं रहता, बल्कि आध्यात्मिक और दार्शनिक रूप ग्रहण कर लेता है।

रागणी 28 इस समूची त्रासदी को सांस्कृतिक स्थायित्व प्रदान करती है। "झंग नगर के पावन धाम पै, फूल चढ़ावैं लोग लुगाई" तथा "हो कै फ़ना वे अमर कुहागे" जैसी पंक्तियाँ यह दर्शाती हैं कि हीर–राँझा अब केवल कथा-पात्र नहीं रह जाते, बल्कि लोक-स्मृति और सामूहिक आस्था के प्रतीक बन जाते हैं। इस प्रकार व्यक्तिगत त्रासदी सांस्कृतिक विरासत में परिवर्तित हो जाती है।

इस अध्ययन से यह भी स्पष्ट होता है कि पिंगल शास्त्र के सिद्धांत—जैसे सममात्रिक छंद, यति, तुकांत और अनुप्रास—इन रागनियों में केवल संरचनात्मक तत्व नहीं हैं, बल्कि वे भावों की अभिव्यक्ति और सांस्कृतिक संप्रेषण के प्रभावी साधन भी हैं। रागणी की लयात्मकता और ध्वन्यात्मकता उसे ऐसी जीवंत विधा बनाती है जिसमें श्रोता केवल कथा नहीं सुनते, बल्कि उसे भावात्मक रूप से अनुभव भी करते हैं।

समग्रतः रागणी 23–28 यह स्थापित करती हैं कि हीर–राँझा की कथा प्रेम और समाज के मध्य अंतर्निहित संघर्ष को उजागर करती है। सामाजिक संरचनाएँ प्रेम को सीमित कर सकती हैं, परंतु प्रेम अपनी अंतिम परिणति में लोक-स्मृति, सांस्कृतिक प्रतिष्ठा और अमरता प्राप्त कर लेता है। इसी कारण यह रागणी-श्रृंखला लोक-साहित्य, सांस्कृतिक अध्ययन और सामाजिक विमर्श—तीनों दृष्टियों से अत्यंत महत्त्वपूर्ण मानी जा सकती है।

7 | निष्कर्ष

निष्कर्षतः रागणी 23–28 के वृत्तांत, मूल काव्य-पाठ तथा साहित्यिक विवेचन के समेकित अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि हीर–राँझा की यह रागणी-श्रृंखला प्रेमगाथा के अंतिम और सर्वाधिक निर्णायक चरण का बहुआयामी सांस्कृतिक निरूपण प्रस्तुत करती है। रागणी 23–24 में प्रेम सामाजिक स्वीकृति, विवाह-संस्कार और सांस्कृतिक उत्सव के रूप में उभरता है, जबकि रागणी 25 में वही प्रेम पारिवारिक प्रतिष्ठा और सामाजिक कठोरता के कारण विषादपूर्ण अंत में परिणत हो जाता है। रागणी 26–27 में राँझे का विलाप, आत्म-समर्पण और मृत्यु को स्वीकार करना प्रेम को आध्यात्मिक ऊँचाई प्रदान करता है, जहाँ मिलन का अंतिम स्वरूप लौकिक न होकर आत्मिक बन जाता है। रागणी 28 में यही प्रेम लोक-स्मृति, आस्था और सांस्कृतिक अमरता के रूप में प्रतिष्ठित होता है।

अध्ययन से यह भी सिद्ध होता है कि इन रागणियों में नारी-पक्ष अत्यंत सशक्त रूप में उपस्थित है। हीर केवल करुणा की प्रतीक नहीं, बल्कि सामाजिक गरिमा, वैचारिक स्पष्टता और आत्मनिर्णय की चेतना से संपन्न पात्र के रूप में उभरती है।

पिंगल शास्त्र की दृष्टि से इन रागणियों में सममात्रिक छंद, यति, तुकांत तथा अनुप्रास का संतुलित प्रयोग काव्य की लयात्मकता, श्रव्यता और मंचीय प्रभाव को सुदृढ़ करता है। इस प्रकार यह शोध प्रतिपादित करता है कि हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा केवल लोककथा नहीं, बल्कि प्रेम, प्रतिरोध, सांस्कृतिक स्मृति और लोकचेतना का सशक्त दस्तावेज है।

संदर्भ सूची

[1] आशोधिया, आनन्द कुमार. (2025). *हीर-राँझा रागणी संग्रह*. एस जैन पब्लिकेशन।

[2] आशोधिया, आनन्द कुमार. (2026). *हीर-राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा: पिंगल शास्त्र के आलोक में एक सांस्कृतिक विश्लेषण (रागणी 1–7 के संदर्भ में)*. दि एकेडेमिक, 4(3). पृ. 2261–2265. https://doi.org/10.5281/zenodo.19542794

[3] आशोधिया, आनन्द कुमार. (2026). *हीर-राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा: पिंगल शास्त्र के आलोक में एक सांस्कृतिक विश्लेषण (रागणी 8–16 के संदर्भ में)*. शोधपत्र: इंटरनेशनल जर्नल ऑफ साइंस एंड ह्यूमैनिटीज, 3(4). पृ.154-159. https://www.shodhpatra.org/papers/volume-3/issue-4/spijsh45689/

[4] आशोधिया, आनन्द कुमार. (2026). *हीर-राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा: पिंगल शास्त्र के आलोक में एक सांस्कृतिक विश्लेषण (रागणी 17–22 के संदर्भ में)*. दि एकेडेमिक, 4(4)। [प्रकाशनार्थ प्रेषित पांडुलिपि]।

[5] दुग्गल, करतार सिंह. (2004). *हीर-राँझा*. साहित्य अकादेमी।

[6] द्विवेदी, हजारीप्रसाद. (1990). *हिंदी साहित्य की भूमिका*. राजकमल प्रकाशन।

[7] गुलाटी, दामोदर. (1989). *पंजाबी लोककथाएँ और उनका साहित्यिक रूप*. पंजाब विश्वविद्यालय प्रकाशन।

[8] हैनसेन, कैथरीन. (1992). *उत्तर भारत का नौटंकी रंगमंच*. कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय प्रकाशन।

[9] हाशिम शाह. (1973). *किस्सा हीर-राँझा*. फिरोज़सन्स।

[10] रामानुजन, अट्टिपट्ट कृष्णस्वामी. (1991). *भारत की लोककथाएँ: बाईस भाषाओं की मौखिक कथाओं का चयन*. पेंगुइन बुक्स।

[11] शाह, वारिस. (1966). *हीर वारिस शाह*. शेख़ गुलाम अली एंड संस।

[12] शुक्ल, रामचन्द्र. (2002). *हिंदी साहित्य का इतिहास*. लोकभारती प्रकाशन।

[13] ठाकुर, रमेश. (2010). *लोक साहित्य और सामाजिक चेतना*. वाणी प्रकाशन।

[14] यादव, बलबीर सिंह. (2015). *हरियाणवी लोक साहित्य और रागणी परंपरा*. हरियाणा साहित्य अकादमी।

How to cite this article?

Ashodhiya, A. K. (2026). Heer–Ranjha in the Haryanvi Ragni Tradition: A Cultural Analysis in the Light of Pingal Shastra (With Reference to Ragnis 23–28): **हीर–राँझा की हरियाणवी रागणी परंपरा: पिंगल शास्त्र के आलोक में एक सांस्कृतिक विश्लेषण (रागणी** 23–28 **के संदर्भ में)**. *RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary*, *11*(4), 14-20. https://doi.org/10.31305/rrijm.2026.v11.n04.002